Research Paper | History | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 5 | Issue : 10 | Oct 2019




# BHARTIYA SWADHINTA AANDOLAN PAR PRATHAM VISHWAYUDDH TATHA DWITIYA VISHWAYUDDH KA PRABHAV

# भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन पर प्रथम विश्वयुद्ध तथा द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव

Dr. Sakaldev Yadav

ग्राम–साननपट्टी, पो0–औरहा, भाया–नरहिया, जिला–मधुबनी, बिहार. 847108

## ABSTRACT

1914 में प्रथम विश्वयुद्ध शुरू होने पर गदर पार्टी ने अपने आदमियों और हथियारों को सैनिकों और स्थानीय क्रांतिकारियों की मदद से एक गदर की शुरूआत के लिए भेजने का निर्णय लिया। हजारों लोग स्वेच्छा से भारत वापस लौटने को तैयार हो गये। 21 फरवरी 1915 पंजाब में सशस्त्र विद्रोह की तारीख तय कर ली गई। दुर्भाग्यवश, अधिकारियों को इस योजना का पता चल गया और उन्होंने त्वरित कार्यवाही की। विद्रोही रेजिमन्ट्स को प्रतिबंधित कर या तो उनके नेताओं को फाँसी दे दी गई या जेल में डाल दिया गया। भारत छोड़ो आंदोलन सही मायने में एक जनांदोलन था जिसमें लाखों आम हिन्दुस्तानी शामिल थे। इस आंदोलन ने युवाओं को बड़ी संख्या में अपनी ओर आकर्षित किया। उन्होंने अपने कॉलेज छोड़कर जेल का रास्ता अपनाया। जिस दौरान कांग्रेस ने नेता जेल में थे उसी समय जिन्ना तथा मुस्लिम लीग के उनके साथी अपना प्रभाव क्षेत्र फैलाने में लगे थे। जून 1944 में जब विश्व युद्ध समाप्ति की ओर था तो गांधी जी को रिहा कर दिया गया। जेल से निकलने के बाद उन्होंने कांग्रेस और लीग के बीच फासले को पाटने के लिए जिन्ना के साथ कई बार बात की। 1945 में ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार बनी। यह सरकार भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में थी। उसी समय वायसराय लॉर्ड वावेल ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के बीच कई बैठकों का अयोजन किया।

**शब्द संकेत :** विश्वयुद्ध, क्रातिकारियों, कांग्रेस, मुस्लिम लीग, भारतीय एवं स्वतंत्रता।

**विषय प्रवेश :**

जून 1914 में प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हुआ इसमें एक ओर ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और जापान जिनके साथ बाद में अमेरिका और इटली भी जुड़ गये थे तो दूसरी ओर जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी और तुर्की आदि थे। भारत में युद्ध के वर्षों को राष्ट्रवादी नेताओं की प्रतिक्रिया दो स्तरों पर हुई। कई नेताओं ने, जिनमें लोकमान्य तिलक भी शामिल थे, जिन्हें 1914 में रिहा कर दिया गया था, युद्ध के समर्थन का निर्णय इस आधार पर लिया कि अंग्रेज भारतीयों की वफादारी का पुनर्भुगतान अधि–राज्य का प्रावधान बनाकर करेंगे। उन्होंने इस तथ्य को नहीं समझा कि विभिन्न शक्तियों प्रथम विश्व युद्ध अपने उपनिवेशों की रक्षा के लिए ही लड़ रही है।

कई भारतीय नेता इस बात को स्वीकार कर चुके थे कि अंग्रेज सरकार तब तक किसी प्रकार की छूट नहीं देगी जब तक कि लोकप्रिय जनमत का दबाव नहीं होगा। अंग्रेजों पर दबाव बनाने के लिए राजनीतिक जन आन्दोलन आवश्यक था। कई और कारक भी राष्ट्रीय आंदोलन को इस दिशा में मोड़ रहे थे। विश्व युद्ध ने इस मिथक को खत्म कर दिया था कि पश्चिमी देश, एशियाई देशों से श्रेष्ठ है क्योंकि उनकी जाति श्रेष्ठ है, और युद्ध से भारत के गरीबों की समस्याएं और बढ़ गई थी। अंग्रेजों ने युद्ध की लागत के कारण करों में वृद्धि कर दी। अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों के कारण आवश्यक वस्तुओं के दाम आसमान छू रहे थे। इसलिए उस समय लोग किसी भी जन–आंदोलन में भाग लेने को तैयार थे।

1907 के सूरत विभाजन के पश्चात् उदारवादी नेताओं के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस,निष्क्रिय और निर्जीव राजनीतिक संगठन बन चुका था जिसके पास कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था जिस पर लोग विश्वास कर सके। इसलिए दो होम–रूल लीगों की स्थापना 1915–16 में की गई। एक के नेता लोकमान्य तिलक थे तो दूसरी एक अंग्रेज प्रशंसक महिला, एनी बेसेन्ट और एस सुब्रमण्यम अय्यर।

श्रीमती एनी बेसेन्ट जो जन्म से आयरिश थीं, थियोसाफिकल सोसाइटी को सदस्य के रूप में भारत आई थी। बाद में उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली। उन्होंने 1914 में लन्दन में एक होमरूल लीग की स्थापना की थी और एक होमरूल लीग की स्थापना 15 सितम्बर 1916 में की जिसका मुख्यालय मद्रास के निकट अडयार में था।

तिलक की लीग की स्थापना 28 अप्रैल 1916 में हुई जिसका मुख्यालय पूना में था। दोनों ही लीगों ने एक दूसरे से सहयोग किया और दोनों ने ही गतिविधियों के कार्यक्षेत्र भी विभाजित कर लिये। जहाँ तिलक की होमरूल लीग ने अपना कार्यक्षेत्र महाराष्ट्र, कर्नाटक, म0प्र0 और बेरार को बनाया, वहीं बेसेन्ट की लीग ने शेष भारत में कार्य किया। इसी दौरान तिलक ने उदारवादियों पर उन्हें कांग्रेस में प्रवेश देने का दबाव बनाये रखा। वे जानते थे कि एक जनाधार वाले आंदोलन को कांग्रेस की सहायता की जरूरत होगी।

दोनों ही लीगों पूरे देश भर में होमरूल या युद्ध के बाद स्वराज के लिए प्रचार जारी रखा। इसी आन्दोलन के दौरान तिलक ने अपना प्रसिद्ध नारा ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर ही रहूँगा'' दिया। तिलक और बेसेन्ट दोनों ने ही पूरे देश का दौरा किया और लोगों के बीच होमरूल/स्वराज का संदेश पहुंचाया। उन्होंने अपना संदेश तिलक ने अपने समाचार पत्र यंग इण्डिया और बेसेन्ट ने उनके मुखपत्र न्यू इण्डिया के माध्यम से लोकप्रिय भावनाओं को जगाने की कोशिश की। आंदोलन में मोतीलाल नेहरू और तेजबाहदुर सप्रू जैसे उदारवादी नेताओं को आकर्षित किया जो इसके सदस्य भी बने। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध के दौरान होमरूल लीग समाचार पत्रों, जनसभाओं, और पैम्पलेट बांटकर फैलाने की कोशिश की।

आंदोलन का उद्देश्य प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश राज के अधीन ही, भारत को स्वराज दिलाना था। यह संवैधानिक सीमाओं के अन्दर ही था। दोनों ही लीगों ने त्वरित प्रगति की। कई उदारवादी नेता जो कांग्रेस की निष्क्रियता से असंतुष्ट थे होमरूल आंदोलन से जुडे। स्वाभाविक तौर पर होम रूल लीगों ने भारतीय अंग्रेज सरकार का ध्यान अैर गुस्सा अपनी ओर खीचा।

अंग्रेजों ने आंदोलन को बलपूर्वक कुचलने की कोशिश की। श्रीमती बेसेन्ट पर दबाव डाला गया कि वे न्यू इण्डिया का प्रकाशन बंद करें, व उन्हें घर में ही नजरबंद कर दिया गया। आंदोलन ने एकाएक तब अखिल भारतीय रूप धारण कर लिया जब तिलक व बेसेन्ट को निजी मुचलका भरने से इंकार करने पर कैद कर लिया गया। आंदोलन के कारण आम जनता में राष्टभक्ति, निर्भयता, आत्म–सम्मान और बलिदान की भावनाएं जागृत हुई। अंततः सरकार ने झुकते हुए 1917 में मोटेंगे–चेम्सफोर्ड घोषणापत्र स्वीकार किया जिसमें एक क्रमागत प्रक्रिया के माध्यम से भारतीयों को स्वराज्य देने का लक्ष्य रखा गया। होमरूल आंदोलन का 1917 में कांग्रेस में विलय हो गया और उसी वर्ष श्रीमती एनीबेसेंट पहली महिला के रूप में कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष चुनी गई। कांग्रेस ने भी होमरूल के उद्देश्यों को स्वीकार कर लिया। यह आंदोलन की सबसे बड़ी सफलता थी।

किन्तु भारत सरकार अधिनियम 1919 के पारित होने पर इससे संबंधित मुद्दों पर कांग्रेस विभाजित हो गई। जहाँ एक ओर तिलक एक कानूनी केस लड़ने के लिए लंदन चले गये वहीं श्रीमती बेसेंट ने सुधारों की नई योजना को स्वीकार कर लिया, इससे आन्दोलन कमजोर पड़ गया। यद्यपि होमरूल आन्दोलन अपने लक्ष्य हासिल करने में असफल हो गया तो भी इसके कारण युद्ध के वर्षों में जब कांग्रेस जनता को कोई दिशा देने में असफल हो गयी थी, भारतीयों के दिलों में राष्ट्रवाद की आग सुलगती रही। होमरूल आंदोलन के संबंध में प्रो0 एस0आर0 मेहरोत्रा कहते हैं, होमरूल लीग ने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन को गहरे तक प्रभावित किया। पहली बार कोई आंदोलन राष्ट्रीय स्तर पर हुआ और राजनीतिक समितियों ने भारत के बहुत बड़े हिस्से तक पहुंच बना ली।

**पूर्व अध्ययनों की समीक्षा :**

**ए. आर. देशाई (1959)** द्वारा लिखित पुस्तक में दर्शाया गया है कि स्वाधीनता आंदोलन पर प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभाव के कारण आन्दोलन की गति धीमी हो गई थी साथ ही कई संगठनों में अन्तर्कलह भी उत्पन्न हो गय था लेकिन आन्दोलन अनवरत जारी रहा।

**बिपिन चन्द्र एवं अन्य (1972)** द्वारा लिखित पुस्तक में स्वाधीनता आंदोलन के विभिन्न स्वरूपों पर व्यापक चर्चा की गई है और आंदोलन को सफल बनाने में प्रमुख नेतृत्वकर्त्ताओं की भूमिका को रेखांकित किया गया है साथ ही प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उत्पन्न संकटों को भी दर्शाया गया है।

**ई.एम.एस. नम्बूदरीपाद (1986)** द्वारा लिखित पुस्तक में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का सांगोपांग वर्णन किया गया है जिसमें होमरूल लीग आंदोलन के लिए ब्रिटिश प्रशासनिक नीति को ही जिम्मेवार माना है तथा यह भी रेखांकित किया गया है कि प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव होमरूल लीग आन्दोलन पर नहीं के बराबर पड़ा।

**मृदुला मुखर्जी (2004)** द्वारा लिखित पुस्तक में भारत में किसानों द्वारा किए गए अहिंसात्मक आंदोलनों की व्यापक चर्चा की गई है तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में किसानों की भूमिका को रेखांकित किया गया है।

**राजेन्द्र प्रसाद (1949)** द्वारा लिखित पुस्तक स्वाधीनता आंदोलनों की चर्चा की गई है और उन आंदोलनों में महात्मा गांधी की भूमिका को रेखांकित किया गया है।

**अध्ययन का उद्देश्य :**

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की घटनाओं व अनुभवों ने आन्दोलनकारियों के साथ–साथ अंग्रेजों को हिला कर रख दिया था। प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध आन्दोलनकारियों के बीच मतभेद उत्पन्न करने में सफल तो हुआ किन्तु आन्दोलनकारियों के हिम्मत को तोड़ नहीं सका और देश आजाद हो गया। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर उद्देश्य निर्धारित किया गया है।

प्रस्तावित शोध आलेख का उद्देश्य निम्नलिखित तथ्यों पर आधारित है :–

- स्वाधीनता आन्दोलन पर प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।
- इस अध्ययन के आधार पर स्वाधीनता आन्दोलन का तत्कालीन समाज पर पड़ने वाले प्रभावों के आयामों का तथ्यपरक विश्लेषण किया गया है।
- वर्त्तमान अध्ययन के आधार पर स्वाधीनता आन्दोलन का औपनिवेशिक शासक के विभिन्न नीतियों पर प्रभाव का विश्लेषण एवं समीक्षात्मक अन्वेषन किया गया है।

**अध्ययन पद्धति :**

यह शोध आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक आलोचनात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। वर्त्तमान अध्ययन भारतीय

स्वाधीनता आन्दोलन पर प्रथम विश्वयुद्ध तथा द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रभाव के विविध पक्षों के अन्वेषण से संबंधित है अतः यह शोध आलेख मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए मूल अध्ययन स्रोत तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं एवं दस्तावेज तथा विभिन्न आचार्यों द्वारा सम्पादित पुस्तकों द्वारा लिया है।

**1914 की कोमागाता मारू घटना और गदर पार्टी :**

कोमागाता मारू एक जापानी जहाज था, जो 1914 में 376 यात्रियों को पंजाब से लेकर हाँगकाँग, शंघाई, चीन, योकोहामा होते हुए वैंकूवर ब्रिटिश कोलम्बिया के रास्ते कनाडा पहुंचा। उन यात्रियों में से 230 को कनाडा ने स्वीकार कर लिया किन्तु 356 यात्रियों को कनाडा में उतरने की स्वीकृति नहीं दी गयी और जहाज को जबरन वापस भारत जाने के लिए मजबूर किया गया। यात्रियों में 340 सिक्ख, 24 मुस्लिम और 12 हिन्दू थे, और ये सभी ब्रिटेन की ही प्रजा कहलाते थे। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ की ये उन कुछ घटनाओं में से एक थी जो कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका के उन आप्रवासी नियमों को दर्शाती है, जिनके अनुसार एशियाई मूल के प्रवासी नागरिकों को वहाँ रहने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

कोमागाता मारू घटना के द्वारा भारतीय समूहों द्वारा व्यापक स्तर पर कनाडा के पक्षपात पूर्ण प्रवासी नियमों का प्रचार किया गया। इसके साथ ही घटना से संबंधित भावनाओं को भारतीय क्रांतिकारी संगठन गदर पार्टी द्वारा भी समर्थन देकर उत्प्रेरित करने की कोशिश की गई। 1914 में केलिफोर्निया में भी कई सभायें आयोजित की गई, जिनमें प्रमुख अप्रवासी भारतीयों जैसे बरकतउल्लाह, तारकनाथ दास, और सोहन सिंह जैसे गदरपार्टी के सदस्यों ने इस घटना का उपयोग गदर आन्दोलन के लिए सदस्यों की भर्ती करने के लिए भी किया। सबसे उल्लेखनीय कार्य था भारत में हो रहे जन–भावनाओं के उभार का प्रचार–प्रसार कर उनका समर्थन करना।आम जनता से इन योजनओं को समर्थन नहीं मिलने से कुछ ज्यादा हासिल नहीं हो पाया।

1914 में प्रथम विश्वयुद्ध शुरू होने पर गदर पार्टी ने अपने आदमियों और हथियारों को सैनिकों और स्थानीय क्रांतिकारियों की मदद से एक गदर की शुरूआत के लिए भेजने का निर्णय लिया। हजारों लोग स्वेच्छा से भारत वापस लौटने को तैयार हो गये। लाखों डॉलर उनके खर्च के लिए एकत्रित किया गये। कई लोगों ने अपनी जीवन भर की जमा पूंजी, जमीन, और सम्पत्ति दे दी।

गदर पार्टी के लोगों ने सूदूर पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया और पूरे भारत में भारतीय सैनिकों से सम्पर्क किया और कुछ रेजिमेन्टस को विद्रोह के लिए तैयार कर लिया। 21 फरवरी 1915 पंजाब में सशस्त्र विद्रोह की तारीख तय कर ली गई। दुर्भाग्यवश, अधिकारियों को इस योजना का पता चल गया और उन्हेंाने त्वरित कार्यवाही की। विद्रोही रेजिमन्ट्स को प्रतिबंधित कर या तो उनके नेताओं को फाँसी दे दी गई या जेल में डाल दिया गया।

गदर आंदोलन ने कई लोगों को ब्रिटेन के विरूद्ध विद्रोह के लिए प्रेरित किया। सिंगापुर में 5वीं लाइट इन्फेन्ट्री के जवानों ने जमादार चिश्ती खान और सुबेदार डुंडे खान के नेतृव में विद्रोह किया। एक भयानक लड़ाई, जिसमें कई लोग मारे गये, के बाद से कुचल दिय गये। 37 लोगों को सार्वजनिक फाँसी दी गई, जबकि 41 लोगों को आजीवन निर्वासन दिया गया। 1915 में एक असफल क्रांतिकारी प्रयास में जतिन मुखर्जी जिन्हें बाघा जतिन के नाम से भी जाना जाता है, ने पुलिस से लड़ते हुए बालासोर में अपने प्राणों की आहूति दी। रास बिहारी बोस, राजा महेन्द्र प्रताप, लाला हरदयाल, अब्दुल रहीम, मौलाना, ओबेदुल्ला सिंधी, चंपक रमन पिल्लैई, सरदार सिंह राणा और मैडम कामा दूसरे अन्य भारतीय थे जिन्होंने विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियाँ संचालित की जहाँ उन्हें समाजवादी और अन्य उपनिवेश विरोधी शक्तियों का समर्थन मिला।

राष्ट्रवादियों को लगने लगा था कि अंग्रेजों के विरूद्ध एक संयुक्त मंच की जरूरत है। देश में बढ़ती हुई राष्ट्रीय भावनाओं और राष्ट्रीय एकता की चाहत ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1916 के अधिवेशन में दो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को जन्म दिया। पहला कांग्रेस के दोनो धड़े एकत्रित हो गये। पुराने विवादों ने महत्व खो दिया था और विभाजन के कारण कांग्रेस निष्क्रिय हो गई थी। तिलक ने 1914 में जेल से रिहा होने के बाद इस परिवर्तन को महसूस किया और कांग्रेस की दोनों धाराओं को मिलाने के लिए अपने मत को भी लचीला बनाया। उन्होंने घोषणा की, मैं सभी से आवाह्न करता हूँ कि हम भारत में वहीं करने की कोशिश कर रहे हैं जो होमरूल आयरलैण्ड में करते आ रहे हैं। हम प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार चाहते हैं न कि सरकार को उखाड़ फेंकना, और मुझे यह कहने में जरा भी हिचक नहीं है कि भारत के विभिन्न भागों में घटित हिंसा की घटनाए न केवल मेरे लिए घृणित है किन्तु मेरे दृष्टिकोण में दुर्भाग्यवश, एक बड़ी सीमा तक हमारी राजनीतिक प्रगति को अवरूद्ध करती है।

लखनऊ समझौता हिन्दू मुस्लिम एकता की दिशा में एक महत्वपूर्ण बिन्दू था। दुर्भाग्यवश, इसमें हिन्दू और मुस्लिम ज्यादा बड़ी मात्रा में शामिल नहीं थे और इसमें अलग चुनाव क्षेत्रों का सिद्धांत स्वीकार किगया गया था। लखनऊ में जो कुछ हुआ इसके प्रभाव शीघ्र दिखाई पड़ने लगे। उदारवादियों एवं कट्टरवादियों के बीच एकता तथा कांग्रेस और मुस्लिमलीग की एकता ने देश की राजनीति में उत्साह की लहर पैदा की। यहां तक की अंग्रेज सरकार को भी राष्ट्रवादियों को शांत करना पड़ा। पहले राष्ट्रवादी आंदोलन को कुचलने के लिए सरकार ने शक्ति का सहारा लिया था। बड़ी संख्या में कट्टर राष्ट्रवादियों और क्रांतिकारियों को जेल भेजा गया या मुख्यात भारत सुरक्षा अधिनियम या इस जैसे नियमों के तहत बंदी बनाया गया। सरकार ने अब राष्ट्रवादी विचारों को शांत करने का निर्णय लिया। 20 अगस्त 1917 को उन्होनें घोषणा की कि भारत में उनकी नीति, भारत की ब्रिटिश साम्राज्य का अविभाज्य अंग मानते हुए एक जिम्मेदार सरकार गठन की दिशा में स्वशासी संस्थानों का क्रमशः विकास करना है। जुलाई 1918 में मांटेगचेस्सफोर्ड सुधारों की घोषणा की गई। किन्तु यह बहुत थोड़ा वह भी बहुत देर से दिया गया मामला था। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को शीघ्र ही इसके तीसरे व अन्तिम दौड़ संघर्ष के दौर गाँधी युग में प्रवेश करना था।

द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने से पहले ब्रिटिशों ने भारत में अपने शासन को करने की निरर्थकता का एकसास किया था। युद्ध समाप्त होने तक, ब्रिटिश साम्राज्य की उपनिवशों को बनाए रखने में असमर्थ और अनिच्छुक ग्रेट ब्रिटेन की निधि नष्ट हो गई थी। द्वितीय विश्व युद्ध ने भारत की आजादी की लड़ाई में एक उत्प्रेरक के रूप में काम किया था। सुभाष चंद्र बोस ने भारत से ब्रिटिशों को खदेड़ने के लिए एक सैन्य अभियान शुरू करने के उद्देश्य से भारतीय स्वयं सेवकों और दक्षिण पूर्व एशिया में जापान के युद्धबंदियों को शामिल करने वाली एक महत्वपूर्ण प्रतिबद्ध सैन्य सेना के रूप में आईएनए का गठन किया और उसमें वह सफल भी हुए।

भारतीय सैनिकों की मदद से आईएनए और जापानी सेना उत्तर पूर्व में इंफाल और कोहिमा में ब्रिटिश सेना को रोकने में सफल रही थी। आज भी कुछ भारतीयों को यह पता होगा कि भारत ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अपने मित्र राष्ट्र से 25 लाख स्वंय सेवक सैनिकों और प्रथम युद्ध के दौरान 15 लाख सैनिकों का योगदान दिया था। सैनिक बहुत ही विनम्र और जरूरतमंद पुष्ठभूमि वाले थे, परंतु वे धरती पर समुद्र में और हवा में बहुत देर तक साथ लड़े।

भारतीय सैनिक जमीन की हर लड़ाई में हिम्मत से लड़े और एक ऐसे साहस का परिचय दिया जो आज भी भारतीय सेना के कठिन परिस्थितियों में प्रेरित करता है। भारतीय सैनिकों के पराक्रम को पूर्वी और उत्तरी अफ्रीका, इटली, बर्मा और यहां तक कि सिंगापुर, मलय प्रायद्वीप में भी सराहा गया था। भारत की वायु सेना के पायलटों द्वारा निभाई गई भूमिका भी महान और अच्छी तरह से प्रलेखित है।

पूर्व में भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश भारतीय सेना के रूप में जापानियों के खिलाफ युद्ध लड़ा था और अंततः दक्षिण पूर्व एशिया को हासिल करने में भी सफल रहे थे, जिसमें सिंगापुर, मलय प्रायद्वीप और बर्मा शामिल थे। अगर भारतीय सैनिक उपरोक्त देशों के साथ मिलकर युद्ध न लड़ते, तो उन देशों का इतिहास बहुत भिन्न हो सकता था।

करीब 36000 से अधिक भारतीय सैनिकों ने युद्ध में अपनी जान गँवा दी थी। 34000 सैनिक घायल हुए थे और 67000 सैनिक युद्ध में कैदी बना लिए गए थे। ब्रिटिश सेना में सम्मलित भारतीय सैनिकों ने 17 विक्टोरिया क्रॉस को प्राप्त कर लिया था जो अंग्रेजों के तहत सबसे उच्चतम सैन्य सम्मान था।

**कलकत्ता लाईट हार्स और ऑपरेशन क्रीक :**

मार्च वर्ष 1943 में एसओई जिसने नूर इनायत खान को प्रशिक्षित किया था उन्होंने भारत में एक गुप्त मिशन को जारी किया। गोवा उस समय पूर्तगाली शासन के अधीन था और द्वितीय विश्व रुद्ध के दौरान एक तटस्थ क्षेत्र था। एहनेफेल जर्मन का एक व्यापरी जहाज था, जो दो अन्य व्यापारी जहाजों के साथ मोमुगांव में बंदरगाह पर आया था और उसने संबंधित नौसेना की गतिविधि पर एक्सिस बलों को जानकारी प्रेषित की थी।

कलकत्ता लाईट हार्स के अधिकारी जो एक आरक्षित यूनिट में थे उनमें लगभग सभी कम अनुभव वाले अधिकारी शामिल थे, वह कलकत्ता से गोवा के दक्षिणी भाग की ओर रवाना हुए। उनसे तीन जर्मन के जहाज डूब गए जिससे अरब देश के सागर में मित्र देशों की नौसेना को काफी नुकसान हुआ।

जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ, ब्रिटिश सरकार ने भारत में वापसी के उपायों का शुभारंभ किया। हिंसक विभाजन ने देश को प्रभावपूर्ण आघात दिए थे, ब्रिटिश सरकार के कारण भारत में पेशेवर और अच्छी तरह से प्रशिक्षित रक्षा बलों का उन्माद हुआ था। ब्रिटिशों के अन्य मजबूत विरासत संस्थानों के रूप में नागरिक सेवाओं, न्यायपालिका, रेलवे और अन्य सेवाओं का शुभारंभ हुआ। जो आज एक स्थिर नींव के रूप में देश की सेवा करने और भारत को विकास के पथ पर अग्रसर करने में योगदान दे रहा है।

जैसा हम जानते हैं कि द्वितीय विश्व युद्ध में भारत का योगदान दक्षिण दशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के रूप में सकारात्मक परिणाम था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूर्वी बर्मा के साथ—साथ उत्तर पश्चिम में अफगानिस्तान में भी भारत के कार्यों की सराहना की गई। भारत कभी भी द्वितीय विश्व युद्ध के कारण का हिस्सा नहीं था, लेकिन इसके योगदान क युद्ध के परिणाम पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा था।

भारत छोड़ों आंदोलन, द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 9 अगस्त को 1942 को आरम्भ किया गया था। यह एक आन्दोलन था जिसका लक्ष्यस भारत से ब्रितानी साम्राज्य को समाप्त करना था। यह आंदोलन महात्मा गांधी द्वारा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मुम्बई अधिवेशन में शुरू किया गया था। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विश्वविख्यात काकोरी काण्ड के ठीक सत्रह साल बाद 9 अगस्त सन 1942 को गांधी जी के आह्वाहन पर समूचे देश में एक साथ आरम्भ हुआ था। यह भारत को तुरन्त आजादी करने के लिए अंग्रेजी शासन के विरूद्ध एक सविनय अवज्ञा आन्दोलन था।

क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी तीसरा बड़ा आंदोलन छेड़ने का फैसला लिया। 8 अगस्त 1942 की शाम को बम्बई में अखिल भारतीय कॉंगेस कमेटी के बम्बई सत्र में अंग्रेजों भारत छोड़ों का नारा दिया गया था। हालांकि गांधी जी को फौरन गिरफ्तार कर लिया गया था लेकिन देश भर के युवा कार्यकर्ता हड़तालों और तोड़फोड़ की कार्रवाइयों के जरिए आंदोलन चलाते रहे। कांग्रेस में जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी सदस्य भूमिगत प्रतिरोधी गतिविधियों में सबसे ज्यादा सक्रिय थे। पश्चिम में सतारा और पूर्व में मेदिनीपुर जैसे कई जिलों में स्वतंत्र सरकार, प्रतिसरकार की स्थापना कर दी गई थी। अंग्रेजों ने आंदोलन के प्रति काफी सख्त रवैया अपनाया फिर भी इस विद्रोह को दबाने में सरकार को साल भर से ज्यादा समय लग गया।

विश्व युद्ध में इंग्लैण्ड को बुरी तरह उलझता देख जैसे ही नेताजी ने आजाद हिन्द फौज को दिल्ली चलो का नारा दिया, गांधी जी ने मौके की नजाकत को भाँपते हुए 8 अगस्त 1942 की रात में ही बंबई से अंग्रेजों को भारत छोड़ो व भारतीयों को करो या मरो का आदेश जारी किया और सरकारी सुरक्षा में यरवदा पुणे स्थित आग खान पैलेस में चले गये। 9 अगस्त 1942 के दिन इस

आन्दोलन को लालबहादुर शास्त्री सरीखे एक छोटे से व्यक्ति ने प्रचण्ड रूप दे दिया। 19 अगस्त 1942 को शास्त्री जी गिरफ्तार हो गये। 9 अगस्त 1924 को ब्रिटिश सरकार का तख्ता पलटने के उद्देश्य से बिस्मिल के नेतृत्व में हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ ने दस जुझारू कार्यकर्ताओं ने काकोरी काण्ड किया था जिसकी यादगार ताजा रखने के लिये पूरे देश में प्रतिवर्ष 9 अगस्त को काकोरी काण्ड स्मृति–दिवस मनाने की परम्परा भगत सिंह ने प्रारम्भ कर दी थी और इस दिन बहुत बड़ी संख्या में नौजवान एकत्र होते थे।

9 अगस्त 1942 को दिन निकलने से पहले ही कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सभी सदस्य गिरफ्तार हो चुके थे और कांग्रेस को गेरकानूनी संस्था घोषित कर दिया गया। गान्धी जी के साथ भारत कोकिला सरोजिनी नायडू को यरवदा पूणे के आगा खान पैलेस में, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद को पटना जेल व अन्य सभी सदस्यों को अहमदनगरर के किले में नजरबन्द किय गया था। सरकारी आँकड़ों के अनुसार इन जनांदोलन में 140 लोग मारे गये, 1630 घायल हुए, 17000 डीआईआर0 में नजरबन्द हुए तथा 60221 गिरफ्तार हुए। आन्दोलन को कुचलने के ये आँकड़े दिल्ली की सेंट्रल असेम्बली में ऑनरेबुल होम मेम्बर ने पेश किये थे।

भारत छोड़ो आंदोलन सही मायने में एक जनांदोलन था जिसमें लाखों आम हिन्दुस्तानी शामिल थे। इस आंदोलन ने युवाओं को बड़ी संख्या में अपनी ओर आकर्षित किया। उन्होंने अपने कॉलेज छोड़कर जेल का रास्ता अपनाया। जिस दौरान कांग्रेस ने नेता जेल में थे उसी समय जिन्ना तथा मुस्लिम लीग के उनके साथी अपना प्रभाव क्षेत्र फैलाने में लगे थे।

जून 1944 में जब विश्व युद्ध समाप्ति की ओर था तो गांधी जी को रिहा कर दिया गया। जेल से निकलने के बाद उन्होंने कांग्रेस और लीग के बीच फासले को पाटने के लिए जिन्ना के साथ कई बार बात की। 1945 में ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार बनी। यह सरकार भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में थी। उसी समय वायसराय लॉर्ड वावेल ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के बीच कई बैठकों का अयोजन किया।

**निष्कर्ष :**

अंत में हम कह सकते हैं कि प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध का भारतीय स्वाधीनता आंदोलन पर कई एक रूपों में प्रभाव पड़ा। कभी उस प्रभाव के कारण आंदोलन में फूट पड़ा तो कभी शिथिलता जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई। युद्ध का प्रभाव आंदोलन को प्रभावित तो किया किन्तु आंदोलन को रोक नहीं सका और भारत आजाद हो गया।

**संदर्भ स्रोत :**

1. Desai, A.R. (1959) Social Background of Indian Nationalism, Popular Prakashan, Bombay, pp. 232-233.
2. Chandra, Bipan (2010) The Rise and Growth of Economic Nationalism in India, Economic Policies of Indian National Leadership, 1880-1905, Har-Anand Publication, New Delhi, pp. 36-48.
3. Chandra, Bipan, Tripathy, Amlesh and Barun(1972) De, *Freedom Struggle,* National Book Trust, New Delhi, pp. 39-42.
4. Sarkar, Sumit (1985) *Modern india, 1885-1947,* Association of Asian Studies, Delhi, pp. 40-48.
5. Namboodripad, (1986) E.M.S., *History of India's Freedom Struggle,* Social Scientist Press, Trivandrum, pp. 52-72.
6. Mukhetjee, Mridula( 2004)*Peasants in India's Non-violent Revolution: Practice and Theory,* Sage Publication, New Delhi, , p. 354.
7. Prasad, Rajendra (1949) Satyagraha in Champaran, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, , pp. 201-2.